International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले शासकीय व अशासकीय महाविद्यालयों के किशोरों के आत्म–प्रत्यय एवं सृजनात्मक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. रश्मि पण्ड्या

सहायक प्राध्यापक, निर्मला शिक्षा महाविद्यालय, उज्जैन

Abstract

''उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले शासकीय व अशासकीय महाविद्यालयों के किशोरों के आत्म–समप्रत्यय व मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव के समीक्षा से सम्बंधित है जिसमें पाया गया कि उच्चशिक्षा व शहरी क्षेत्र के प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में सैद्वान्तिक ,सौंदर्यात्मक,सामाजिक,राजनीतिक व धार्मिक मूल्यों में सार्थक अन्तर था परन्तु आर्थिक मूल्यों में कोई अनतर नहीं था इसी प्रकार उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले किशोर विद्यार्थियों के स्वबोध में कोई अन्तर नहीं था परन्तु उनके सामाजिक बोध में सार्थक अन्तर दिखाई देता है ।

Keyword: उच्च शिक्षा – उच्च शिक्षा ,शिक्षा का वह स्वरुप है जो मनुष्य को कार्यगत एवं स्वभावगत विशिष्टता प्रदान करती है।
शासकीय महाविद्यालय– सार्वजनिक क्षेत्र के शैक्षणिक संस्थान हैं जो मुख्य रुप से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के साथ सरकार के नियमों और विनियमों के माध्यम से प्रबंधित होते है।
अशासकीय महाविद्यालय – ये महाविद्यालय उच्च शिक्षा के संस्थान है जो सरकारों द्वारा संचालित ,स्वामित्व या संस्थागत रुप से वित्त पोषित नही है ।
किशोर –यह वह अवस्था है जिसमें बच्चा बाल्यावस्था से परिपक्वता की ओर बढ़ता है । यह अवस्था जीवन का सबसे कठिनतम काल मानी गई है ।
आत्म–सम्प्रत्यय –व्यक्ति अपने गुणों व व्यवहार के सम्बंध में जो मत रखते है उसका वही आत्म–सम्प्रत्यय है ।
सृजनात्मक मूल्य –वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बालकों में शिक्षा के साथ–साथ नैतिक गुणों के सृजन की आवश्यकता है । इसके लिए उनमें कुछ मूल्यों का संग्रहण किया जाना अति आवश्यक है । बिना मूल्यों के सृजन के शिक्षा व्यर्थ है ।

प्रस्तावना

एक व्यक्ति जिस प्रकार से अपना प्रत्यक्षीकरण करता है अथवा जिस ढंग से अपने को देखता है उसे ही हम उस व्यक्ति का आत्म- संप्रत्यय कहते हैं। आत्म- संप्रत्यय वह है जैसा कि व्यक्ति वास्तव में अपने संबंध में विचार रखता है। आत्म -संप्रत्यय 'मैं' है । बालक जैसे-जैसे बड़ा होता जाता है वह एक आत्म-संरचना बना लेता है ।

सृजनात्मकता मानवीय क्रियाकलाप की वह प्रक्रिया है जिसमें गुणगत रूप से नूतन ,भौतिक और आत्मिक मूल्यों का निर्माण किया जाता है। सृजनात्मकता निर्माणशील क्रियाकलाप के स्वरूप से निर्धारित होती है। सृजनात्मक मूल्यों की संभावनाएं सामाजिक संबंधों पर निर्भर करती है।

आत्म-संप्रत्यय व सजनात्मक मूल्यों का गहरा संबंध है। व्यक्ति का स्वयं का संप्रत्यय ही उसमें मूल्यों के निर्माण और उत्सर्ग के लिए उत्तरदायी होता है। इसी धारणा को यह अध्ययन परिभाषित करता है। हमारी आज की शिक्षा में संगठित तथा नियमित चिंतन के लिए बहुत ही कम प्रावधान हैं और इससे भी

कम प्रावधान हैं प्रयोगात्मक या अनुभवात्मक अधिगम के लिए। शिक्षा से यह अपेक्षा है कि वह उच्च प्रकार के बोध, अधिक खुलापन और प्रश्न करने की योग्यता व साहस तथा समाधान ढूँढने का बल प्रदान करे।

दूसरे शब्दों में शिक्षा से अपेक्षा है कि स्वयं के, समुदाय के या और व्यापक रूप में समाज के आयामों के अंतर्गत विकासात्मक खोज, पर्यवेक्षण या अनुसंधान की जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया का सूत्रपात करें। इससे मूल्य शिक्षा की आवश्यकता स्पष्ट होती है।

न्यादर्श :-

यह अध्ययन उज्जैन शहर तक सीमित है। इसमें दो शासकीय महाविद्यालयों के 50 + 50 किशोर अर्थात कुल 100 किशोर विद्यार्थी तथा तीन अशासकीय महाविद्यालयों के 35 + 35 + 30 किशोर अर्थात कुल 100 किशोर विद्यार्थी लिए गए। इस प्रकार कुल 200 किशोर विद्यार्थियों जो 18 से 21 वर्ष आयु समूह के थे, का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। उपकरण के रूप में 'मूल्य परीक्षण' डॉ. आर.के. ओझा द्वारा निर्मित तथा जी.पी. ठाकुर द्वारा निर्मित 'आत्म-प्रत्यय' प्रश्नावली प्रदत्त संग्रह के लिए प्रयुक्त की गई। मूल्य परीक्षण द्वारा 6 प्रकार के मूल्य सैद्धांतिक,आर्थिक,सौंदर्यात्मक,सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक तथा आत्म–प्रत्यय प्रश्नावली द्वारा दो प्रकार के आत्म- प्रत्ययों - स्वबोध व सामाजिक बोध का मापन किया गया । इसके लिए प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण कर क्रांतिक अनुपात के माध्यम से निष्कर्ष निकाला गया।

तालिका क्रमांक 01
शासकीय महाविद्यालय

महाविद्यालय क्रमांक 01	महाविद्यालय क्रमांक 02	कुल
50	50	100

तालिका क्रमांक 02
अशासकीय महाविद्यालय

महाविद्यालय क्रमांक 01	महाविद्यालय क्रमांक 02	महाविद्यालय क्रमांक 03	कुल
35	35	30	100

प्रस्तुत शोध पत्र की समीक्षा निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत की गई है –

1.शीर्षक – उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले शासकीय व अशासकीय महाविद्यालयों के किशोरों के आत्म–सम्प्रत्यय एवं सृजनात्मक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन''

2. उद्देश्य –

अध्ययन के उद्देश्य निम्न है –

1ण शासकीय महाविद्यालयों का किशोरों के आत्म–समप्रत्यय पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना ।

2ण अशासकीय महाविद्यालयों का किशोरों के आत्म–समप्रत्यय पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना ।
3ण शासकीय महाविद्यालयों का किशोरों के सृजनात्मक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना ।
4ण अशासकीय महाविद्यालयों का किशोरों के सृजनात्मक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना ।

3. परिकल्पना –

अध्ययन हेतु निम्न परिकल्पना बनाई गई –

1ण शासकीय व अशासकीय महाविद्यालयों में पढ़ने वाले किशोरों के आत्म–समप्रत्यय मे सार्थक अन्तर है ।
2ण शासकीय व अशासकीय महाविद्यालयों में पढ़ने वाले किशोरों के सृजनात्मक मूल्यों के विकास में सार्थक अन्तर है ।

4. सांख्यिकी प्रविधि –

शोध कार्य के लिए परिचोन्मुखी अनुसंधान का प्रयोग किया गया है । यह एक ऐसे प्रकार का अनुसंधान होता है जिसमें स्वतंत्र चरों का कार्य हो चुका होता है तथा अनुसंधानकर्ता किसी आश्रित चर अथवा चरों के निरीक्षण से कार्य प्रारंभ करता है । वह स्वतंत्र चर का पश्चावलोकन करता है ताकि आश्रित चरों पर पडने वाले प्रभाव तथा उनके सम्बंधों को ज्ञात कर सके ।
प्रस्तुत अध्ययन में Mean, SD, C.R . आदि सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है ।

निष्कर्ष :-

सैद्धांतिक मूल्यों वाले व्यक्ति केवल सत्य की खोज में रहते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य जीवन और ज्ञान को व्यवस्थित करना होता है। प्रस्तुत शोध से स्पष्ट है कि शासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत किशोरों में सैद्धांतिक मूल्य अशासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत किशोरों की अपेक्षा अधिक पाए जाते हैं ।शासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत किशोर अधिकतर मध्यम आय वर्ग से आते हैं । ये हर प्रकार की सुविधाओं का अर्जन करते हैं। अतः ये सिद्धांतों के प्रति दृढ़ होते हैं।

आर्थिक मूल्य वाले व्यक्ति केवल शारीरिक संतुष्टि में विश्वास करते हैं। वे केवल इसमें रुचि रखते हैं कि उनके लिए क्या उपयोगी है। शासकीय और अशासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत किशोरों के आर्थिक मूल्य में कोई अंतर नहीं पाया जाता है क्योंकि धनोपार्जन और जीविकोपार्जन के संबंध में सभी की इच्छाएं एक जैसी होती हैं। अतः शासकीय महाविद्यालयों के छात्र और अशासकीय महाविद्यालयों के छात्र समान आर्थिक लाभ कमाना चाहते हैं।

सौंदर्यात्मक मूल्यों वाले किशोर सुंदरता,सुडौलता या फिर योग्य या उचित में विश्वास करते हैं। वे जीवन को घटनाओं के समूह के रूप में लेते हैं । वे जीवन को अपने लिए जीते हैं । शासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत किशोरों में सौंदर्यात्मक मूल्य अधिक पाए जाते हैं क्योंकि ये प्रकृति की गोद में जीवन यापन करने वाले होते हैं तथा हर चीज में सौंदर्य तलाशते हैं जबकि अशासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत किशोर उच्च–मध्यम और निम्न वर्ग से होने के कारण सौंदर्य की तरफ ज्यादा आकर्षित नहीं हो पाते हैं । वे कृत्रिम दुनिया को ज्यादा पसंद करते हैं ।

सामाजिक मूल्यों वाले व्यक्ति मानव से प्रेम करते हैं। ऐसे लोग दयालु, सहानुभूति रखने वाले होते हैं। शासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत किशोर अशासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत किशोरों से ज्यादा सामाजिक मूल्यों वाले होते हैं।

राजनीतिक मूल्यों वाले व्यक्ति शक्ति में विश्वास करते हैं। किसी भी क्षेत्र में नेतृत्व करने वाले व्यक्ति सामान्य तथा उच्च शक्ति मूल्य रखते हैं ।अशासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत किशोरों में शासकीय महाविद्यालयों में पढ़ने वाले किशोरों की अपेक्षा अधिक राजनीतिक मूल्य पाए जाते हैं क्योंकि ये उच्च और मध्यम वर्ग के होते हैं और किसी भी तरह शक्ति और धन प्राप्त करना चाहते हैं।

धार्मिक मूल्यों वाले व्यक्तियों में एकता पाई जाती है। ये रहस्यमयी चीजों और ब्रह्मांड को जानने में रुचि रखते हैं और स्वयं को संपूर्णता से सम्बद्ध करते हैं। शासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत किशोरों में अशासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत किशोरों की अपेक्षा अधिक धार्मिक मूल्य पाए जाते हैं क्योंकि अशासकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थी आधुनिक परिवारों से होते हैं जबकि शासकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थी परंपरागत परिवारों से होते हैं जहाँ धार्मिक रीति-रिवाजों को अधिक मान्यता दी जाती है।

शासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत किशोरों और अशासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत किशोरों के आत्म- संप्रत्यय के स्वबोध में कोई अंतर नहीं पाया गया जबकि दोनों क्षेत्रों में अध्ययनरत किशोरों के मध्य आत्म- संप्रत्यय के सामाजिक बोध में अंतर पाया गया। शासकीय महाविद्यालयों के किशोरों के मध्य स्वबोध और सामाजिक बोध के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया जबकि अशासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत किशोरों के मध्य स्वबोध और सामाजिक बोध में आंशिक रूप से नकारात्मक संबंध पाया गया।

स्व के प्रति प्रत्यय का निर्माण व्यक्ति उसी आधार पर करता है जैसा कि अन्य व्यक्ति उसके बारे में सोचते हैं । अतः अशासकीय महाविद्यालय बच्चों के स्वनिर्माण में शासकीय महाविद्यालयों की अपेक्षा अधिक योगदान देते हैं।

समीक्षा :-

शोधकर्ता की चिंतनशीलता के आधार पर:-

प्रस्तुत शोध अध्ययन 18 से 21 वर्ष के किशोर विद्यार्थियों के मूल्यों के परीक्षण और आत्म- संप्रत्यय से संबंधित है । शोधकर्ता ने अपना अध्ययन देवास नगर तक सीमित रखा है । शोध कार्य और उसके द्वारा प्राप्त परिणाम शोधकर्ता के चिंतन को पूर्णता प्रदान करते हैं । मूल्य और आत्म- संप्रत्यय एक ऐसा चर है जिनका मूल्यांकन किशोर अवस्था में ही किया जा सकता है । अतः शोधकर्ता द्वारा विद्यार्थियों के सही उत्तर का चयन किया गया है।

सकारात्मकता :-

इस शोध कार्य का सबसे प्रशंसनीय भाग रहा कि शोधकर्ता द्वारा मूल्य के अंतर्गत 6 प्रकार के मूल्यों का परीक्षण शासकीय महाविद्यालयों और अशासकीय महाविद्यालयों दोनों के ही मध्य किया गया जिससे

विद्यार्थियों में वर्तमान परिस्थिति के परिप्रेक्ष्य में मूल्यों की स्थिति जानने का अवसर प्राप्त हुआ साथ ही स्वबोध और सामाजिक बोध में किशोर विद्यार्थियों का दृष्टिकोण ज्ञात किया गया है जो एक सराहनीय कार्य की श्रेणी को दर्शाता है ।

समालोचना :-

प्रस्तुत शोध -अध्ययन वैसे तो अपने आप में परिपूर्ण है परंतु फिर भी कुछ बिंदु ऐसे हैं जिन पर चर्चा की जानी चाहिए। यथा - चयनित न्यादर्श की महाविद्यालयों में अध्ययन की अवधि अधिक हो जिससे उनके संगठन के प्रभाव का अध्ययन किया जा सके।

संगठन के प्रभाव का अध्ययन केवल सामाजिक बोध के लिए ठीक है परंतु अनिवार्य नहीं है। सामाजिकता का भाव बच्चों में परिवार, संस्कार और वातावरण की देन है ना कि किसी महाविद्यालय में अध्ययन की अवधि। इस प्रकार मूल्य भी परिवार और संस्कारों द्वारा प्रदत्त संपत्ति हैं।

कुल मिलाकर शोध -अध्ययन व प्राप्त परिणाम संतोषजनक हैं । क्षेत्र का प्रभाव किशोर विद्यार्थियों के स्वबोध, सामाजिक बोध व मूल्यों पर स्पष्ट दिखाई देता है। शोध से प्राप्त निष्कर्ष समाज में किशोरों के प्रति हमारे उत्तरदायित्व को दर्शाते हैं जो एक सकारात्मक अध्ययन से प्राप्त हुए हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. बुल, एन.जे. (1969), मोरल एज्यूकेशन ,लंदन : राउटलैज एडं कंगनपाल लिमिटेड
2. शर्मा ,एस.आर. (1990), मोरल .एंड वैल्यू इन एज्यूकेशन ,भारत : कोसमोस पबिल्केशन्स
3. Jaimala. (2005), Study of Self-Concept stress among the adolescents belonging to working and non-working mothers, M.A.(Education), Dissertation, Post-Graduate Department of Education, university of Jammu. Jammu, pp.56-67.
4. http://en.wikipedia.org/wiki/values_education
5. http://en.wikipedia.org/wiki/self-concept.